

Padma Vibhushan



PROF. BRAJ BASI LAL

A world-renowned archaeologist, Prof. Braj Basi Lal was the Director General of the Archaeological Survey of India from 1968 to 1972. In the latter years, he took voluntary retirement to pursue his research programs independently. First, he joined Jiwaji University, Gwalior as a professor and later the Indian Institute of Advanced Study, Shimla of which he was also the Director.

2. Born on 2nd May, 1921, Prof. Lal did his master's from Allahabad University in Sanskrit obtaining a first-class-first. Thereafter, he joined the Archaeological Survey of India in 1946. His excavations cover a very wide range, from Palaeolithic times to the early historical. At Kalibangan, Rajasthan, he excavated a prosperous city of the Harappan Civilization. The excavations unearthed the evidence of the earliest agricultural field and the earliest earthquake. The excavations at Hastinapura, Indraprastha, etc., have established that Mahabharata was itihaas. Likewise, his excavations at Ayodhya, Shringaverpura, etc., have indicated that the Ramayana too has a basis in history. In 1961, he conducted excavations in Egypt also, which threw welcome light on Egyptian prehistory.

3. Prof. Lal's publications include over 150 seminal research papers, published in scientific journals, both in India and abroad: USA, UK, France, Italy, Russia, Egypt, Afghanistan, Japan, etc. Amongst his books are The Earliest Civilization of South Asia (1997); New Light on Indus Civilization (1998); The Saraswati Flows On: Continuity of Indian Culture (2002); How Deep are the Roots of Indian Civilization: Archaeology Answers (2009); Historicity of the Mahabharata: Evidence of Literature, Art and Archaeology (2013); The Rigvedic People: Invaders? / Immigrants? / Or Indigenous: Evidence of Archaeology and Literature (2015); Kaushambi Revisited (2017); The Rise of Civilization in the Ganga Valley (2018); Indraprastha: The Earliest City Going Back to the Mahabharata Times (2021); and others.

4. Prof. Lal was awarded D.Litt. (Honoris Causa) in 1994 by the Institute of Archaeology, St. Petersburg, Russia. The same year, he presided over World Archaeological Congress. He has been chairman and member of several committees of UNESCO. In 1979, Nalanda University awarded him the title of Vidyavaridhi, and in 1982, Mithila Vishwavidyalaya honoured him with the title of Mahamahopadhyaya. In 1997, the then Vice President of India released a Felicitation Volume Facets of Indian Civilisation in his honour. In 2014, the Deccan College Postgraduate and Research Institute, Pune conferred on him D. Litt. (Honoris Causa). In 2019, the Vice President of India honoured Prof. Lal by releasing a three-volume set of a book titled "Felicitating an Archaeological Legend: Prof. Braj Basi Lal."

5. Prof. Lal was honoured with Padma Bhushan in the year 2000 in recognition of his contribution to archaeology, by the President of India.

पद्म विभूषण



प्रो. ब्रज बासी लाल

विश्व विख्यात पुरातत्वविद, प्रो. ब्रज बासी लाल वर्ष 1968 से 1972 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक रहे हैं। बाद में, उन्होंने स्वतंत्र रूप से अपना शोध कार्य शुरू करने के लिए स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली। वह, पहले जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के प्रोफेसर और तदुपरांत इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला के निदेशक के पद पर रहे हैं।

2. प्रो. लाल का जन्म 2 मई, 1921 में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में प्रथम श्रेणी में अपनी परास्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके पश्चात, उन्होंने वर्ष 1946 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण में पदभार ग्रहण किया। उनके द्वारा कराई गयी खुदाई में पुरापाषाण काल से लेकर पूर्व ऐतिहासिक काल तक का लम्बा काल-खंड शामिल है। कालीबंगन, राजस्थान में उन्होंने खुदाई कराकर हड़प्पा सभ्यता के एक समृद्ध शहर को ढूँढ निकाला। इस उत्खनन कार्य में उन्होंने पुरातन समय के खेतों और भूकम्प के साक्ष्यों का खुलासा किया। हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ आदि में की गई खुदाई से यह सिद्ध हुआ है कि महाभारत एक इतिहास था। इसी प्रकार, अयोध्या, श्रृंगवेरपुर आदि में उनके द्वारा कराई गयी खुदाई से यह पता चलता है कि रामायण की जड़ें भी इतिहास में स्थापित हैं। वर्ष 1961 में उन्होंने मिस्र में भी खुदाई का कार्य कराया जिससे मिस्र के पूर्व इतिहास के बारे में पता चला।

3. प्रो. लाल के भारत और दूसरे देशों जैसे यूएसए, यूके, फ्रांस, इटली, रूस, मिस्र, अफगानिस्तान, जापान आदि की वैज्ञानिक पत्र-पत्रिकाओं में 150 से ज्यादा मौलिक शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं। उनकी पुस्तकों में दि अर्लिएस्ट सिविलाइजेशन ऑफ साउथ एशिया (1997); न्यू लाइट ऑन इंडस सिविलाइजेशन (1998); दि सरस्वती फ्लॉज ऑन: कांटिन्युटी ऑफ इंडियन कल्चर (2002); हाउ डीप आर द रूट्स ऑफ इंडियन सिविलाइजेशन: आर्कियोलॉजी अंसर्स (2009); हिस्ट्रीसिटी ऑफ द महाभारत: एविडेंस ऑफ लिटरेचर, आर्ट एंड आर्कियोलॉजी (2013); दि ऋग्वेदिक पिपल्स: इन्वेडर्स/इमिग्रान्ट्स/ऑर इंडिजिनस: एविडेंस ऑफ आर्कियोलॉजी एंड लिटरेचर (2015); कौशाम्बी रिविजिटेड (2017); दि राइज ऑफ सिविलाइजेशन इन गंगा वैली (2018); इन्द्रप्रस्थ: दि अर्लिएस्ट सिटी गोइंग बैक टू द महाभारत टाइम्स (2021); आदि शामिल हैं।

4. प्रो. लाल को द इस्टीट्यूट ऑफ आर्कियोलॉजी, सेंट पीटर्सबर्ग, रूस द्वारा वर्ष 1994 में डी.लिट. की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। उसी वर्ष उन्होंने वर्ल्ड आर्कियोलॉजिकल कांग्रेस की अध्यक्षता की। वह यूनेस्को की अनेक समितियों के अध्यक्ष और सदस्य भी रहे हैं। वर्ष 1979 में, उन्हें नालंदा विश्वविद्यालय द्वारा विद्यावारिधि की उपाधि से सम्मानित किया गया और 1982 में, मिथिला विश्वविद्यालय ने उन्हें महामहोपाध्याय की उपाधि से विभूषित किया। वर्ष 1997 में, भारत के तत्कालीन उप राष्ट्रपति ने उनके सम्मान में फैसेट्स ऑफ इंडियन सिविलाइजेशन के अभिनंदन खंड का विमोचन किया। वर्ष 2014 में, द डेक्कन कॉलेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे ने उन्हें डी. लिट. की मानद उपाधि से सम्मानित किया; वर्ष 2019 में, भारत के तत्कालीन उप राष्ट्रपति ने "फेलिसिटेटिंग ए आर्कियोलॉजिकल लीजेंड: प्रो. ब्रज बासी लाल" नामक पुस्तक के तीन-खंड का विमोचन करके प्रोफेसर लाल को सम्मानित किया।

5. पुरातत्व विज्ञान के क्षेत्र में प्रो. लाल के योगदान के लिए, वर्ष 2000 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा उन्हें पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया है।